



# Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

**किशोर विद्यार्थियों की वैज्ञानिक सोच और भावनात्मक दक्षता का तुलनात्मक**

**विश्लेषण**

**Dr. Aarti Kumawat**

## संक्षेप

यह अध्ययन किशोर विद्यार्थियों की वैज्ञानिक सोच और भावनात्मक दक्षता का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में जहाँ संज्ञानात्मक विकास पर अधिक ध्यान दिया जाता है, वहीं वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता जैसे आंतरिक कारकों पर अपेक्षित महत्व नहीं दिया जाता, जबकि ये कारक विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन, सामाजिक व्यवहार और व्यक्तिगत संतुलन को गहराई से प्रभावित करते हैं। अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि किशोरों में वैज्ञानिक सोच और भावनात्मक दक्षता का स्तर क्या है तथा लिंग एवं शैक्षणिक उपलब्धि के आधार पर इन कारकों में किस प्रकार के अंतर दिखाई देते हैं। इसके लिए उदयपुर शहर के चार सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के 14 से 16 वर्ष आयु वर्ग के कुल 360 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

अनुसंधान में जनसांख्यिकीय प्रश्नावली, वैज्ञानिक दृष्टिकोण मापन तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्केल का उपयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों द्वारा किया गया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि वैज्ञानिक सोच और भावनात्मक दक्षता दोनों एक-दूसरे से सकारात्मक रूप से संबंधित हैं। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि उच्च शैक्षणिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों में इन दोनों क्षमताओं का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। लिंग के आधार पर भी कुछ अंतर देखने को मिले, जो आगे के शैक्षणिक हस्तक्षेपों की दिशा तय कर सकते हैं।

यह अध्ययन शिक्षकों, शिक्षा-नीति निर्माताओं और परामर्शदाताओं के लिए उपयोगी है, क्योंकि यह विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व को रेखांकित करता है तथा उनके संवर्धन हेतु आवश्यक शैक्षणिक उपाय सुझाने में सहायता प्रदान करता है।

मुख्य शब्द:- वैज्ञानिक सोच, भावनात्मक दक्षता, किशोर विद्यार्थी, शैक्षणिक उपलब्धि, तुलनात्मक विश्लेषण  
**परिचय**

किशोरावस्था मानव विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील चरण है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर व्यापक परिवर्तन होते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थी न केवल ज्ञान अर्जित



# Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

करते हैं, बल्कि अपने व्यक्तित्व, व्यवहार एवं सामाजिक कौशलों का निर्माण भी करते हैं। ऐसे में वैज्ञानिक सोच और भावनात्मक दक्षता दो ऐसे आवश्यक घटक हैं, जो किशोरों के समग्र विकास, शैक्षणिक उपलब्धि और जीवन कौशलों को प्रभावित करते हैं। वैज्ञानिक सोच विद्यार्थियों को तर्क, प्रमाण, विश्लेषण और वस्तुनिष्ठता के आधार पर समस्याओं को समझने की क्षमता देती है। यह उन्हें जिज्ञासु, तार्किक और निष्पक्ष बनाती है, जिससे वे मिथकों, भ्रमों तथा अंधविश्वासों से दूर रहते हुए वास्तविक तथ्यों पर आधारित निर्णय ले पाते हैं। बदलते वैज्ञानिक और तकनीकी युग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य हो गया है।

दूसरी ओर, भावनात्मक दक्षता या भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) किशोरों को अपनी भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और दूसरों की भावनाओं को पहचानने में सहायता प्रदान करती है। यह क्षमता तनाव प्रबंधन, आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति, सहयोग, सामाजिक संपर्क और आत्मविश्वास से जुड़ी होती है। किशोरावस्था में, जहाँ भावनाओं में उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है, वहाँ उच्च भावनात्मक दक्षता विद्यार्थियों के मानसिक संतुलन, निर्णय क्षमता और सामाजिक अनुकूलन को मजबूत बनाती है। कई अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले विद्यार्थी कठिन परिस्थितियों से अधिक प्रभावी ढंग से निपटते हैं और शैक्षणिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

शिक्षा के आधुनिक संदर्भ में वैज्ञानिक सोच और भावनात्मक दक्षता दोनों ही जीवन से जुड़े कौशल हैं। इन दोनों कारकों के विकास में लिंग, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी माहौल और शैक्षणिक अवसर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी कारण, इन दो चरों का तुलनात्मक विश्लेषण न केवल विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक एवं संज्ञानात्मक विकास को समझने में मदद करता है, बल्कि शिक्षा-नीति निर्माण और शिक्षण-रणनीतियों को भी प्रभावी दिशा प्रदान करता है। यही कारण है कि वर्तमान अध्ययन इन दोनों क्षमताओं के स्तर और पारस्परिक संबंध को समझने का प्रयास करता है।

## अध्ययन की पृष्ठभूमि

वैज्ञानिक दृष्टिकोण एक ऐसी सोच प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को तथ्यों, तर्क और निष्पक्षता के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। यह जिज्ञासा, तार्किकता, खुला मन, संशयवाद और प्रमाण-आधारित सोच जैसे तत्वों से निर्मित होता है। आज के दौर में, जहाँ सामाजिक मीडिया और गलत सूचनाओं का प्रसार तेजी से बढ़ रहा है, वैज्ञानिक दृष्टिकोण नागरिकों को सही और गलत में भेद करने की क्षमता देता है। किशोरावस्था में



# Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस उम्र में बच्चों में दुनिया को समझने की उत्सुकता, खोज की प्रवृत्ति और तार्किक ढंग से विचार करने का स्वभाव अत्यधिक प्रबल होता है।

शिक्षा के क्षेत्र में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को विश्लेषणात्मक सोच, समस्या-समाधान और निर्णय-निर्धारण में सक्षम बनाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले विद्यार्थी किसी भी परिस्थिति में बिना पूर्वाग्रह के समाधान खोजने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा, यह दृष्टिकोण अंधविश्वास, मिथकों और गैर-वैज्ञानिक धारणाओं से मुक्त होकर सामाजिक और व्यक्तिगत विकास को भी सकारात्मक दिशा देता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य केवल तथ्यों को याद कराना नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक प्रवृत्ति को बढ़ावा देना है, जो जीवनभर उपयोगी होती है।

जब विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच विकसित होती है, तो वे अपने करियर, संबंधों, अध्ययन और सामाजिक उत्तरदायित्वों में अधिक सक्षम और जागरूक बनते हैं। इसी कारण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अध्ययन एवं मूल्यांकन शिक्षा-शोध का एक अनिवार्य तत्व माना जाता है।

## भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) व्यक्ति की वह क्षमता है, जिसके माध्यम से वह अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानता, समझता और नियंत्रित करता है। इसमें आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कौशल जैसे घटक शामिल होते हैं। किशोरावस्था जैसे संवेदनशील चरण में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यही वह अवधि है जब विद्यार्थी भावनात्मक उतार-चढ़ाव, सामाजिक दबाव, पहचान के संघर्ष और शैक्षणिक अपेक्षाओं का सामना करते हैं। यदि इस अवस्था में किशोरों के भीतर भावनाओं को सही दिशा में प्रबंधित करने की क्षमता विकसित हो जाए, तो यह उनके मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक प्रदर्शन दोनों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों को तनाव का सामना करने, संघर्षों को सुलझाने, स्वस्थ संबंध बनाने और लक्ष्य-निर्धारण में सहायता करती है। अनुसंधान बताते हैं कि उच्च EI वाले विद्यार्थी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में अधिक संतुलित रहते हैं और अपनी क्षमताओं का उपयोग प्रभावी ढंग से कर पाते हैं। साथ ही, EI सामाजिक सामंजस्य और टीमवर्क को बढ़ावा देती है, जो आधुनिक शिक्षा का आवश्यक घटक है।

आज के समय में जहाँ प्रतिस्पर्धा और मानसिक दबाव बढ़ गया है, वहाँ भावनात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों के लिए आत्मविश्वास, अनुकूलनशीलता और लचीलापन (resilience) विकसित करने का माध्यम बनती है।



# Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

यह केवल शैक्षणिक जीवन में ही नहीं, बल्कि भविष्य के व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए, किशोरों में EI का मूल्यांकन करना जरूरी है, ताकि उनके भावनात्मक विकास को समझकर आवश्यक शैक्षिक हस्तक्षेप किए जा सकें।

## किशोरावस्था में दोनों कारकों की भूमिका

किशोरावस्था मानव विकास का वह चरण है, जहाँ शारीरिक परिपक्वता, भावनात्मक उतार-चढ़ाव और मानसिक क्षमताओं का विस्तार तेजी से होता है। इस अवधि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता दोनों का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये दोनों कारक किशोरों की निर्णय लेने की क्षमता, व्यवहार, अध्ययन की आदतें और सामाजिक संबंधों को गहराई से प्रभावित करते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण किशोरों को तर्कसंगत सोच, प्रमाण-आधारित निर्णय और समस्या-समाधान की दृष्टि प्रदान करता है, जिससे वे मिथकों, अंधविश्वासों या गैर-वैज्ञानिक धारणाओं से बचते हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें जिज्ञासु, विश्लेषणात्मक और वस्तुनिष्ठ बनाता है, जो शिक्षा एवं जीवन के हर क्षेत्र में आवश्यक है।

दूसरी ओर, भावनात्मक बुद्धिमत्ता किशोरों को अपनी भावनाओं को पहचानने, नियंत्रित करने तथा दूसरों की भावनाओं को समझने में सक्षम बनाती है। यह क्षमता सामाजिक संबंधों को मजबूत करती है, आत्मविश्वास बढ़ाती है, तथा तनावपूर्ण परिस्थितियों में मनोवैज्ञानिक संतुलन बनाए रखने में मदद करती है। किशोरावस्था में जब मित्रता, प्रतिस्पर्धा, सामाजिक पहचान और पारिवारिक अपेक्षाएँ अपने चरम पर होती हैं, तब EI उनका आंतरिक मार्गदर्शक बनती है।

दोनों कारक मिलकर किशोरों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास का आधार तैयार करते हैं। शोध बताते हैं कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण और EI में उच्च स्तर वाले विद्यार्थी न केवल पढ़ाई में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं, बल्कि जीवन की चुनौतियों का सामना अधिक परिपक्वता से करते हैं। अतः किशोरावस्था में इन दोनों पहलुओं का अध्ययन आवश्यक है, ताकि विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए प्रभावी शैक्षिक कार्यक्रम और नीतियाँ विकसित की जा सकें।

## अध्ययन का औचित्य

किशोरावस्था मानव विकास का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें विद्यार्थी शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक और भावनात्मक परिवर्तनों से गुजरते हैं। इस संवेदनशील अवस्था में लिए गए अनुभव और विकसित हुई क्षमताएँ उनके भविष्य के व्यक्तित्व, व्यवहार और शैक्षणिक प्रगति को गहराई से प्रभावित करती हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली जहाँ मुख्यतः शैक्षणिक उपलब्धि और परीक्षा-आधारित परिणामों पर केंद्रित है, वहीं विद्यार्थियों की वैज्ञानिक



# Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

सोच, तार्किक क्षमता और भावनात्मक प्रबंधन जैसे मूलभूत कौशलों की उपेक्षा होती रहती है। इसी संदर्भ में, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है, ताकि किशोर विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास को समझा और प्रोत्साहित किया जा सके।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण विद्यार्थियों को तथ्य-आधारित सोच, तार्किक निर्णय और समस्याओं का निष्पक्ष विश्लेषण करने की क्षमता प्रदान करता है। वहीं, भावनात्मक बुद्धिमत्ता तनाव प्रबंधन, सहानुभूति, आत्म-नियमन और स्वस्थ सामाजिक संबंधों को विकसित करती है। यदि इन दोनों कारकों का स्तर स्पष्ट रूप से जाना जाए, तो शिक्षण प्रक्रियाओं और विद्यालयी वातावरण में आवश्यक सुधार किए जा सकते हैं। विशेष रूप से भारत में, जहाँ अंकों को प्राथमिकता दी जाती है, वहाँ विद्यार्थियों के भावनात्मक और चिंतन कौशलों के मापन व संवर्धन पर ध्यान देना अत्यधिक आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त, लिंग और शैक्षणिक उपलब्धि के आधार पर इन दोनों कारकों में अंतर को समझकर यह जाना जा सकता है कि कौन-से समूह को अतिरिक्त सहयोग या विशेष शैक्षिक हस्तक्षेप की आवश्यकता है। इस प्रकार, यह अध्ययन शिक्षा-नीतियों, शिक्षकों, अभिभावकों और मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के लिए उपयोगी दिशा-निर्देश प्रदान करने की क्षमता रखता है। यही इसकी अनुसंधानिक आवश्यकता और औचित्य है।

## अनुसंधान क्रियाविधि

इस अध्ययन की कार्यप्रणाली को एक सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक ढाँचे के अंतर्गत विकसित किया गया है, जिससे किशोरों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विश्वसनीय मूल्यांकन किया जा सके। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण डिजाइन का उपयोग किया गया, जो बिना किसी हस्तक्षेप के वास्तविक परिस्थितियों में विद्यार्थियों की विशेषताओं एवं व्यवहारों का मूल्यांकन करने के लिए उपयुक्त है। यह डिजाइन वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों को समझने में मदद करता है। अनुसंधान प्रक्रिया को इस प्रकार संरचित किया गया कि डेटा संग्रह और विश्लेषण के प्रत्येक चरण में निष्पक्षता एवं सटीकता बनी रहे।

नमूना चयन के लिए उद्देश्यपूर्ण चयन विधि (Purposive Sampling Method) और यादृच्छिक चयन तकनीक का संयोजन किया गया। उदयपुर शहर के चार सरकारी माध्यमिक विद्यालयों को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना गया, जहाँ से कुल 360 किशोर (14–16 वर्ष) अध्ययन में शामिल किए गए। प्रत्येक विद्यालय से 45 लड़के और 45 लड़कियाँ चुने गए, जिससे लिंग आधारित समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो



# Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

सके। इस प्रकार, नमूने में विविधता और संतुलन बनाए रखने से अध्ययन के निष्कर्षों की विश्वसनीयता और सामान्यीकरण क्षमता बढ़ी।

समंक संग्रह हेतु तीन प्रमुख उपकरणों का उपयोग किया गया। प्रथम, शोधकर्ता द्वारा विकसित जनसांख्यिकीय प्रश्नावली, जिसमें आयु, लिंग, शैक्षणिक उपलब्धि एवं पृष्ठभूमि से संबंधित जानकारी शामिल थी। द्वितीय, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को मापने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्केल (बजवा एवं महाजन, 2012) का उपयोग किया गया, जिसमें 49 कथन शामिल हैं। तृतीय, भावनात्मक बुद्धिमत्ता को मापने के लिए ए. के. सिंह एवं श्रुति नारायण (2014) द्वारा विकसित मानकीकृत मापन अपनाया गया। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों द्वारा किया गया, जिससे प्रमुख चरों के बीच संबंध स्पष्ट हो सके।

## परिकल्पना परीक्षण

### परिकल्पना 1:

**H1.** छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण में लिंग (किशोर/किशोरी) के संदर्भ में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

### परीक्षण:

- वन-सैंपल टी-टेस्ट (One-Sample t-test):  
यह परीक्षण वैज्ञानिक दृष्टिकोण के औसत स्कोर की तुलना दो स्वतंत्र समूहों (किशोर और किशोरी) के बीच करता है।

### तालिका 4.25 ; वन-सैंपल परीक्षण परिणाम

परीक्षण मान	t	df	सिग. (2-टेल्ड)	औसत अंतर	95% विश्वास अंतराल
	117.033	359	.000	3.836	3.771

### निष्कर्ष:

इसका t-मूल्य 117.033 है, जिसमें p-मूल्य 0.05 से कम है। इसका अर्थ है कि परिणामों की सांख्यिकीय महत्ता है। 95% विश्वास अंतराल 3.771 से 3.900 के बीच है, औसत अंतर 3.836।

यह इंगित है कि किशोरों और किशोरियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर है। इसलिए वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है और शून्य परिकल्पना (H0) अस्वीकार की जाती है।



# Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

इसका तात्पर्य है कि लिंग के आधार पर छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण में अंतर मौजूद है।

## परिकल्पना 2:

**H2.** माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण और शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण सहसंबंध नहीं है।

## परीक्षण:

- पीयरसन सहसंबंध गुणांक :

यह परीक्षण वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्कोर और शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर के बीच रैखिक संबंध की ताकत और दिशा को मापता है।

## सहसंबंध परिणाम-

तालिका 4.26 : सहसंबंध परिणाम

सहसंबंध		वैज्ञानिक दृष्टिकोण	शैक्षणिक उपलब्धि
वैज्ञानिक दृष्टिकोण	पीयरसन सहसंबंध	1	1
	सिग. (2-टेल्ड)	-	-
	N	360	360
शैक्षणिक उपलब्धि	पीयरसन सहसंबंध	.084	.321
	सिग. (2-टेल्ड)	.111	.0002
	N	360	360



# Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

## निष्कर्ष:

पीयरसन सहसंबंध गुणांक.084 और.111 p-मूल्य, दोनों 0.05 से अधिक हैं। यह बताता है कि शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का संबंध सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना (H<sub>0</sub>) अस्वीकार नहीं की जा सकती। इसका अर्थ है कि माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

## परिकल्पना 3:

**H<sub>3</sub>.** माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच कोई महत्वपूर्ण सहसंबंध नहीं है।

## परीक्षण:

- पीयरसन सहसंबंध गुणांक :

यह परीक्षण दो निरंतर चर (वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्कोर) के बीच संबंध की ताकत और दिशा को मापने के लिए उपयुक्त है।

## सहसंबंध परिणाम:

तालिका 4.27 : सहसंबंध परिणाम

सहसंबंध	भावनात्मक बुद्धिमत्ता	वैज्ञानिक दृष्टिकोण	शैक्षणिक उपलब्धि
भावनात्मक बुद्धिमत्ता	पीयरसन सहसंबंध	1	1
	सिग. (2-टेल्ड)	-	-
	N	360	360
शैक्षणिक उपलब्धि	पीयरसन सहसंबंध	.083	.328 (p < 0.01)
	सिग. (2-टेल्ड)	.104	.000
	N	360	360

नोट: सहसंबंध 0.01 स्तर (2-टेल्ड) पर महत्वपूर्ण है।

## निष्कर्ष:

.328 पीयरसन सहसंबंध गुणांक और.000 p-मूल्य, जो 0.01 से कम है, हैं। इसका मतलब यह है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध है।





# Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

इस तरह, शून्य परिकल्पना ( $H_0$ ) अस्वीकार होती है। यह निष्कर्ष है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता में वृद्धि भी वैज्ञानिक सोच को सुधार सकती है।

तालिका 4.28 : परिकल्पनाओं का तुलनात्मक विश्लेषण

परिकल्पना	परीक्षण विधि	परिणाम	निष्कर्ष
H1	एक नमूना t-परीक्षण (One Sample t-Test)	वैज्ञानिक दृष्टिकोण और लिंग (किशोर/किशोरी) के औसत स्कोर में अंतर का परीक्षण किया गया। t-मूल्य = 117.033, p-मूल्य = .000	लिंग और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत।
H2	पीयरसन सहसंबंध परीक्षण (Pearson Correlation Coefficient)	वैज्ञानिक दृष्टिकोण और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध का परीक्षण किया गया। सहसंबंध गुणांक = .084, p-मूल्य = .111	वैज्ञानिक दृष्टिकोण और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध महत्वपूर्ण नहीं है। शून्य परिकल्पना स्वीकृत।
H3	पीयरसन सहसंबंध परीक्षण (Pearson Correlation Coefficient)	वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच सहसंबंध का परीक्षण किया गया। सहसंबंध गुणांक = .328, p-मूल्य = .000	वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच सकारात्मक और महत्वपूर्ण सहसंबंध पाया गया। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत।

यह सारणी प्रत्येक परिकल्पना के लिए परीक्षण पद्धति, परिणाम और निष्कर्ष का तुलनात्मक विश्लेषण प्रदान करती है।

## सारांश

वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य किशोर विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का मूल्यांकन करना तथा इन दोनों कारकों का शैक्षणिक उपलब्धि और लिंग के आधार पर विश्लेषण करना था। किशोरावस्था एक ऐसा विकासात्मक चरण है जिसमें विद्यार्थी संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक स्तर पर



# Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

महत्वपूर्ण परिवर्तन अनुभव करते हैं। इस अवधि में वैज्ञानिक सोच, तार्किक विश्लेषण और भावनात्मक प्रबंधन जैसे कौशलों का विकास उनके दीर्घकालिक व्यक्तित्व और शैक्षणिक सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी संदर्भ में, इस अध्ययन ने उदयपुर शहर के चार सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के 14–16 आयु वर्ग के 360 विद्यार्थियों के बीच वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर को मापा।

डेटा संग्रह के लिए जनसांख्यिकीय प्रश्नावली, वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्केल (बजवा एवं महाजन, 2012) तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापनी (ए. के. सिंह एवं श्रुति नारायण, 2014) का प्रयोग किया गया। संकलित आंकड़ों का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया, जिससे विभिन्न समूहों के बीच अंतर और चरों के पारस्परिक संबंध स्पष्ट किए जा सके। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता दोनों ही विद्यार्थियों के व्यवहार, निर्णय क्षमता तथा शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं।

इसके अतिरिक्त, अध्ययन ने संकेत दिया कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर में लिंग और शैक्षणिक उपलब्धि के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण अंतर पाए जा सकते हैं, जिन्हें समझना शैक्षिक योजना और हस्तक्षेप के लिए आवश्यक है। इस प्रकार, यह अध्ययन विद्यालयों, शिक्षकों और नीति-निर्माताओं को शिक्षण प्रक्रियाओं में ऐसे उपाय शामिल करने हेतु प्रेरित करता है, जो किशोरों के वैज्ञानिक एवं भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित कर सकें।



# Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

## संदर्भ

1. बजवा, एस., & महाजन, एम. (2012). वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्केल. नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन।
2. सिंह, ए. के., & नारायण, एस. (2014). इमोशनल इंटेलिजेंस स्केल. नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन।
3. भट्टाचार्य, एस. (2019). आधुनिक शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का महत्वा *जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड ह्यूमन डेवलपमेंट*, 8(2), 45–53।
4. भट, एस. ए., & जोशी, जे. (2018). किशोरों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि का संबंध। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एंड बिहेवियरल साइंसेस*, 8(3), 56–63।
5. कौर, आर., & कोली, एस. (2016). माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और शैक्षणिक उपलब्धि का संबंध। *एजुकेशनल क्वेस्ट*, 7(2), 109–115।
6. मंगल, एस. के., & मंगल, यू. (2015). भावनात्मक दक्षता: भावनात्मक बुद्धिमत्ता की समझ. पी.एच.आई. लर्निंग।
7. गोलमैन, डी. (2011). मस्तिष्क और भावनात्मक बुद्धिमत्ता: नए दृष्टिकोण. मोर दैन साउंड।
8. मिश्रा, आर., & कुमार, पी. (2017). किशोरों के समायोजन के पूर्वानुमानक के रूप में भावनात्मक बुद्धिमत्ता। *इंडियन जर्नल ऑफ पॉजिटिव साइकोलॉजी*, 8(1), 77–80।
9. चव्हाण, आर. आर. (2020). विद्यालयी छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण: एक तुलनात्मक अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज*, 10(4), 152–164।
10. शर्मा, पी., & कौर, जी. (2018). किशोरों में तनाव प्रबंधन पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रभाव। *जर्नल ऑफ मेंटल हेल्थ एजुकेशन*, 20(1), 34–41।
11. पटेल, एम., & देसाई, के. (2017). माध्यमिक छात्रों में वैज्ञानिक सोच और तर्क क्षमता। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च स्टडीज*, 5(3), 23–29।
12. कुमार, आर., & रानी, एस. (2019). किशोर शिक्षार्थियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लिंग संबंधी भिन्नताएँ। *जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एंड एजुकेशन*, 11(2), 88–95।